* उस्ताद बेचन *

भाड़ोंका नकल

ऐयार डाकू

— लेखक —

॥ मारकडे शायर ॥

प्रकाशक—
गुल्लु प्रसाद केदारनाथ बुकसेलर,
कचौड़ी गली बनारस सीटी।

मुद्रक— पंचान प्रेस,
सतसागर, बनारस सीटी।

दूसरा दृश्य ।

(जंगल में डाकुओं का गाना)

॥ गाना ॥

मैं मस्ताना नाहर डाकू रहूं मस्त पी जाम् ॥
मालदार गर बन में मिलेतो करू कत्ल हमारा काम
अगर लूट में पड़े जंग तो बाधू जंग से लाम ॥
औ बड़े २ से डरू नहीं गर चलै खूब समसान ॥
माल० ॥ मै चाहू जो शहर लूटलु नाहर मेरानाम
अरे मालदार आवे बन में तो मारू यही कलाम ॥
औलुट मारकर छने बरंडी और मचे खूब फान ॥
माल० ॥ गरज अगर मुह से अपने दूं जदेगिरसम
सीर ॥ जाउं घूम डाकुओ को लेकेपाऊ जहांपैगाम
माल० ॥ बनमें रहूं यही काम हमारा यही फिकर
दिन रात । लडुं भिडु लेऊ माल छिन खर बार का
मेरा जात। सदा कुशल से रहताहूं मयफिल को मेरा
सलाम ॥ माल० ॥

(एक डाकू का चिल्लाते हुए आना)

डाकू—अरे बापरेबापतू लोगन हिंअवाहउवा अउर अउर कुछोखबर नाहीं बाटे गवना करत हउअन।

नाहर-अरे मरदूद कुछ भीकह कोई मालदार आयाहै कि वोही नीद से जागा यहां बेकार आया है।

डाकू—वेकार सेकार नाहीं उका देखा वोही जात हौ और हां हां हां एक बात हौ कि एकठे छोटी सी लड़की भी वोकरे पास हउवे।

नाहर-(का उधर ताकना) खैर गर माल नहीं मिलेगा तो लड़की हाथ आयेगी। (नाहरकाजाना)

तीसरा दृश्य।

(अफयूनका लड़की गंजीनाको साथ लियेहुये जाना)

अफयून—या खुदा जल्दीसे ये जंगल का रास्ताकाटदे आगेइस्टेशन पड़ेगा औ बता सब बाटदे॥

प्यारी गंजीना प्यारीगंजीना तेरीभीकिस्मतपटहोगई के संगमें ठोकर खारहा तकदीर अटपटहो गई॥

(डाकुओं का गोली मारना अफयून का गिरना
नाहर का गजीना का छीन लेना)

सब डाकुओ का--धरो२मारो२पकड़ो मालदार

[एक का गोली मारना अफयून का लगना]

अफयून--हायहाय मौत आगई (गिरकरमरजा

नाहर का:-

अहह कुछ माल ना पाया तो एक लड़की तो मैं पाई
नहीं फरजन्द था कोई अहह बेटी तो कर आई
इसे घर ले चलू बीबी को भी ले चल दिखाउग
करेगी बीबी इसकी प्यार औ अब्बा कहाउगा

[लेके जाना बीबी के पास]

चौथा दृश्य ।

(नाहर के बीबी का बिना फरजन्द के रोना बीबी का नाम गहमर

गाना:-- ❀दादरा❀ गहमर का

मोती जवाहिर घर में भरी । फरजन्द नहीं ।
सोहर हमारा बांका लूटेरा ।
मालिक है सोहर लसकरी ॥ फरजन्द० ॥

नहीं फरजन्द माल सब वृथा।
आजार मेरे जिगर पै परी ॥ फरजन्द० ॥
यह सब माल पीछे को भोगे।
मोती जवाहिर भरी टोकरी॥ फरजन्द० ॥
अरे मारकंडे वृथा सारो है।
छिछिलीहै नैयादरियागहरी ॥ फरजन्द० ॥

(नाहर का गंजीना को लेकर बीबी के पास आना)

ना नाहर-ले बीबी ये मुराद तेरी खोजके लाये।
लाये में छिन लड़की डाका से ले आये ॥
गोली से किया वार इसका बाप मरगया।
हीं हाथ लगा माल ले आये जो मैं पाये॥ १ ॥
जेवर सभी उतार लो लड़की के गले से।
फरजन्द मान इसको खाना दे जो खाये॥
फरजन्द काथा शौक जो फरजन्द ना मिला।
लड़कीये है तुम्हारीओ उसकी तू हैमाये॥ २ ॥
जिसकी जहांमें कुदरत सब कुछ भी दे दिया।
खासा किया तयार मारकंडे में गाये ॥

(माहर की बीबी का गंजीना को गर लगाकर गाना)

गाना--हां मेरे प्यारे सैंया लागु मैं वारी पै सैंयालायो मुराद मैका जाय। चुनमुन सी छोक लाये। हासिल अरमाँ करवाये ॥ जुड़ाये दिखा लिआये २ मोरे सइया लायो मुराद मैका जाय वारीमैं तुझपर जाऊ बलिहारी तुझपर जाऊ मेवार ये प्यारी गवारी गवारी मोरे सैया लायोमुराद मैक जाय ॥ लागू पइया करजरे, लायो मुराद पि मोरे जाकारे। पीमोरे दिलोरे दिलोरे मोरे सै लाये। मुरादमैका जाय ॥ कि मारकंडे कविताई आली२ कथनाई सोगाई मैभाई सुनाई सुनाई मो सैया लाये। मुराद मैका जाय ॥

पांचवां दृश्य।

[माबूद बादशाह का दरबार माबूद बादशाह का दरबार में आना

बादशाह का गानाः—

हू बादशाह मैं चैन नगर का जने जहां।

है जानते को नाम नहीं दुनिये में इन्सा॥
शोहरत है सभी देश में सिरताज का बड़ा।
है कौन मुल्क भाई जो डरसे नहीं रहा॥
आवेजो कोई साम्हने भौ टेढ़ी किये हो।
सुली दऊ चढ़ाय उसे जो है खार ख्वां॥
शाहजादी मेरी जायना इन्द्रर की है परी।
देखेजो कोई उसको बसर गिरजा गस्त खां॥
ऐ मारकंडे तुजपै बड़ी हुक्मे खुदाई।
लाखो किया तयार तू गाने बना बना॥
।बूद का-ऐ वजीर तकदीर बया कासो सुनाऊ।
आया चोर रात महल हाले बताऊ॥

वजीर--जापनाह २ क्या हाल है, क्या कोई मरदूद का हाल है। क्या अहेवाल है॥

माबूद शाह-यही अहेवाल।

पार्ट सोतेथे रात रंगे महल चोर यां आया।
नवलखा वो हार मेरे गर से चुराया॥

वाह वाह वाह ऐ चोरखूब सफाई तू करी
साफ हुआ मालुम नहीं खूब चुराई तू करी ॥

वजीर—जा पनाह आपके महल के चारो तरफ सिपाही रहते हैं पर इतने खबरदारी से हार चुराया

बादशाह—हाँ हाँ मरदूद बड़ा चालाक है, आज भी खबरदार रहना उसका काम ये पाक है।

बजीर-अच्छा खैर मरदूद आया तो जरूर है कि पकड़ा जायगा।

छठवां दृश्य।



(रात का होना नाहर डाकू का चोरी करने चलना)

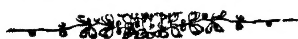
गाना नाहर का दादरा।

चलो यहू डाका जाय भाइयो महलनमें। कलतो चोराया हार नवलखा। आज का हाथ लगजाय भाइयों महलन में ॥ जो कोई आवे मार गिराऊ धड़से दऊ सर उड़ाय भाइयों महलन में। बिछुआ

ला संग सभी है। मारूगा सामने जो आय इयो महलन में॥मारकंडे बाका हूं नाहर। रानी लाऊ उठाय भाइयों महलन में॥

नाहर का—चलो भाइयों रात आधी हो गई। माबूद सोया है महलनमें वक्त पूरी होगई॥

(जाना डाकुओं का माबूद शाह के किल पर)



सातवां दृश्य।

(घर माबूदशाह का सोना और सिपाहियों का पहरे में सोना)

(डाकूओं का घुस कर माल असबाब चोरी करना और शाहजादी के हीरे का कंगन चोराना, शाहजादी का जागना, और बादशाह का चिल्लाना)

माबूद—(जोर से) धरो ऐ पहरेदारो चोर२ भागा

पहरेदारो—अरे किधर भागा किधर भागा किधर गा॥(सब लोग का नाहरको गिरफ्तार करना चोर का भाग जाना, सवेरे का होना, दरबार बादशाह के सामने नाहर को हाजिर करना)

(बादशा का दरबार नाहर को हाजिर करना

मावूद–ऐ वजीर हाजिर कर मरदूद कहाँ है।

वजीरजा पनाह वो मरदूद ये क्या खड़ा है।

मावूद–(देख कर) वाह वाह ऐ नाहर डाकूओं का सरदार हमारे जाल में पड़ा है। कर कैद दं सारे जनम का शेर जो बड़ा है॥

आठवां दृश्य

(नाहर डाकू का गिरफ्तार सुन कर नाहर की बीबी का रोना
(गंजीना का समझाना, गंजीना की उमर १६ वर्ष की है)

नाहर की बीबी–(रोती हुई) हाय हाय अफसोस किया बेहोश सौहर गिरफ्तार हुआ। नहीं तनमन की सुध है जो ये सर पर आजार हुआ। हाय अफसोस बादल फट न गया।

गंजीना का समझाना–अम्मा अम्मा किस गफलत की नींद में सोई ऐ क्या बकती है॥ तू क्या समझती ये तो डाकूओं का काम है गर सुली

ड़जाय तो अव्वल जहां में नाम है॥ खैर खैर ऐनो
ाकूओं का घराना है। अगर मैं भी डाकू खान
ान है। तो मेरी भी यही बाना है॥ घबड़ाओ
ा जी दुखाओ मत जिगर में धीर धरो॥
ार्ट–अगर डाकू कीबेटी हूंतो उसेजाकर बचाऊगा॥
करूगा कैद सहजादी को औ स्वाद चखाऊगा॥
हीं घबराओ अम्माजान बदल सूरत मैं जाऊगा
हूगा चूर उसका कैद अब्बा को छुड़ाऊगा॥ बना
नाम का एक खत बादशाह ठर पठाऊगा।
गी काम ऐ यारी उसे गीदड़ बनाऊगा॥

(गंजीना का खत डाक में भेजना)

नववां दृश्य।

(बादशाह का घर से निकलना दोनों नज़ीरा के साथ बाग में हवा खाने के लिये जाना, परदे से निकलना)

बादशाहका गाना–

ारत सुहावन मगरिब की बागे बहार। बाग भी
ले, फुल निराले॥ फुलों को देखू निहार॥

॥ भाड़ो का नकल

उर्फ़

॥ ऐयार डाकू ॥



भाड़ो का घोड़ा—

घोड़े हैं बछेड़े दिनो में चार साल
न पूछिये मेरे घोड़े का हाल ॥
घोड़ा क्या हमारा काला है सब घोड़ियों
तुर्किस्तानका पाला है, घोड़साल तो घार

॥ आमद भाड़ो का ॥

गाना थियेटर ।

तेरी कुदरत न्यारी मौला कुदरत पै जाउ
जितने हैं मर्दुम जहांमें सब आलम के सि
चौदो पलक धरा बागे ह
खाली नहीं जरा.

॥ रित० ॥ मोटर मगाऊ सबको बिठाऊ सज ब चले संग यार। मस्त बयारे डोलत न्यारे॥ फुल की लागे बू प्यार॥ जन्टोल बनके। पहुंचूगा ध से। देखूगा बागे सिंगार॥ मारकडे क्या रि निराली॥ फूलों की लागी कतार॥

(डाकिया का खत लेकर जाना)

डाकवाला–राजे जनाब बंदा अदाब खत ये ए आयाहै। कदमोंके गुजारिशमें ये डाकवाला लायाहै

बाद०–देख२ वजीर ये खत कैसा कहांसे आया

पढ़ सुनाओ मुझको ऐ डाकवाला लाया

वजीर–जो हाजिर जनाब सुनियेजो खत आय

पढ़ना-जनाबेआली जहांपनाह के बाद अदा हाल मालूम हो कि मैं नाहर डाकू खे खानद एक ऐयार डाकू हूँ जिससें गुजारिशं फरमाते कि मैं आज आपके पास चोरी करने आऊँगा जिससे जहांपनाह को मालूम हो कि अपने

र होशियार हो जांय। दः ऐयार डाकू।

ाद०—हाय अफसोस ! यह कैसी अहेवाल आया तो नाम है मालूम कौन पठाया ॥ खैर वजीर ाशियार रहना आयेगा तो पकड़ही जायेगा र चलो बाग में चलो।

(बादशाह का बाग में पहुँचना)

(गाना बादशाह वगैरः का बाग में ।)

बागे बहार गुलसने कैसे हरे भरे। कैसे ये त खील रहे पते हरे हरे। चंपे की कली बेला कदे रहा वहार। क्या रङ्गदार फूल हैं छोटे जरे२॥ लदावदी भी केतकी भी महक दे रही। है खिल हे जमींपै भी फूले झरे झरे। क्या सूर्यमुखी फूल वली महक से बसा। जाता नहीं जवां से कही पांचे के ढरे॥ ये मस्त बयारे भी डोलती है ाग में। रखी है मारकण्डे कुरसी दरे दरे॥

(एक बुढ़िया का भीखमगी के शक्ल गंजीना यानी ऐयार डाकू का आना, एक लड़का डाकू संग फकीर बना)

गाना डाकू यानी बुढ़िया का—

दै दो अल्ला के राह में चुनवा फकीर ।
मिरजात बादशाह में चुनवा फकीर ॥
पाव भर आटे की है मेरी सवाल ।
आता हूं हर माह में चुनवा फकीर ॥

डाकू–खुदावन्द करीमकी मुबारकहो कुछ अल्ल के राह में ये अन्धे मौताज को मिले ।

बाद०–ऐ वजीर ये कहां से रङ्ग में भङ्ग कर वाली फकीरिन आई इसे दो पैसा देकर बाग बाहर करो ।

वजीर–(बुढ़िया से) ले दो पैसे बाजार से स ले लेना और जल्द बाग से निकल जा फौरन

बुढ़िया–मुबारक हो मुबारक हो जहांपनाहके

(डाकू यानी बुढ़ियाका ढंग करना, चारो तरफ घुमना गिरना)
(बादशाह वजीर का दौड़ आना, बादशाह का अपने गोद में सु लेना और सर थाम लेना, पेट से मुंह दबाना सबका कहना,

अरे धरो धरो वजीर नहीं तो यह मर जाएगा

(सब आदमियों का बुढ़िया को पकड़ लेना और बुढ़िया यानी ऐयार डाकू है । सो बुढ़िया का ढंग किए हुए बादशाहके गरका मोतीका माला

और हीरे का तकमा भीर
से निकालकर अपने
पाकेट में भर
लेना,

और एक खत बादशाह के पाकेट डाल देना।)

बुढ़िया-(होमदार बनके) सरकार अब छोड़ जिये मैं होश में हो गई।

बाद०-(बुढ़िया और लड़के से) अच्छा होशमें गई तो जल्द हमारे बागसे निकलजा नहीं तो शहोनेपर खूब पिटाऊंगाकि आइन्दा मिगीन आवे

बुढ़िया याने डाकू का-अच्छा जहांपनाह मैं भी चली जाती हूं खफा न हों।

या और भिखमंगे लड़केका जोरसे भागना और अपनेघर जाना)

वजीर-बादशाह से जहांपनाह वक्त तो होचुका यों पांच का टैम होगा चलना चाहिए।

(इतना कह कर बादशाह के माथे हाथ करना)

हाय ! अफसोस हमारा तकमा क्या हुआ। धर उधर चकपकाना।

जीर-अरे सरकार मोती की हारभी गरमें नहींहै

बाद०—आंय, आंय आंय, (गलाटटोल कर अररररर वही चोर चुरा ले गया (पाकेट में हा डालना एक खत का पाना) अरे अरे अरे कैसा खत पाकेट में आगया । हाय ? अफसो जबरदस्त डाकू (वजीर से) लो वजीर पढ़ो तो

वजीरका पढ़ना-जनाबेआली जहांपनाह के व आदाब के मालुम हो कि मैं पहले खत में लिख था कि आज चोरी करूगा सो चोरी किया त आप अगर ५००) दें तो मैं कल आपके दरबा में खुद आकर मोती-हार और हीरे का तकमा

दः ऐयार डाकू।

बाद०—आंय आंय आंय ओ मोतीहार त मो देने आयगा तब क्या शाले को गिरिफ्त करांऊगा और सूली चढ़ाउगा।

बादशाह वजीर यह कहते हुये मकानको चले अच्छा बेटा आन



दसवाँ दृश्य ।

(शाहका किलेमें आना और शाहजादीके बिमारी का हाल सुनना)

बादशाह का वजीर से—वजीर ये कैसी महलन घबड़ाहट पड़ी हुई है।

वजीर—बहुत अच्छा जहांपनाह महल में जाता पता लगाता हूँ।

(इतने में एक नौकर का घबड़ाहट के साथ आना)

नौकर—वादे आदाब झुककर सलाम कर जहां शाह बेगम साहब की बहुत बुरी दशा है । अरे हां तक है कि जान की नौबत आगई ।

बाद०—(दहलकर) आह अफसोस ये कहाँ गजब टूटा कोई हकीम भी नजर नहीं आता शाहजादी की दवा करवाते । हाय, अफसोस जरा महल में देखें तो सही ।

(बादशाह का महल में जाना)

—:※—:—※:—

ग्यरहवाँ दृश्य ।

(ऐयार डाकू यानी गंजीना का परदे से निकलना)

गंजीना—वाह २ खूब बादशाह छका होगा, अबतो आज मोतीहार फेरने चलना होगा अच्छा मैंने सुना है कि वेगम की हाल बुरी है यानी बीमार है तो बैद का शक्ल बनकर चलू औरमोती फेर कर ५००) ले आऊँ । गंजीना का जाना

बारहवां दृश्य ।

(बादशाह का दरबार—बादशाह, वजीर वगैरह का आना)

बाद०—या खुदा कोई बैद हकीम भी नजर नहीं आता जो बेगमको दिखाते । अफसोस क्या करू कोई भी तरकीब नही सूझती ।

(ऐयार डाकू का बैद बन कर आना

डाकू का चिलाना—बैद २ सिरो का बेद फोड़े का बैद कान का बैद पेटके बिमारी का बैद २

बाद०—या खुदाये बैदको कहां से भेजा । खै

हजादी को दिखाउँ (बैद से कहना) ओ द, बेद जरा इधर तो आ।

बैद—जी सरकार का हो कौन बिमारी हो सब जड़ी बूटी पास हो।

बाद०—ओ बैद२ तू किस२ चीजका बैद है।

बैद—जी सरकार फिर सुनो। गाना—

है बन्दा हर चीज के रोगमारी का बैद।
जंगल २ बूटी ढूंढूँ सारी बिमारी के बैद॥
फोड़ा माड़ा दात बाई ओ जिस्म नारीके बैद।
जड़ी बुटी का सौदागर हूं और रोग सारी के वैद
मारूंडे हर मुल्कमें घमूँ ओ कफ़जारीके बैद॥

बाद०—अच्छा ए बैद हमारी शाहजादी के पेट में रोग है चल देख कि क्या आजार है।

बैद—सरकार मलामत चलिये सबका जाना)

(सबका घूम कर फिर परदे के आगे आना)

बैद—सरकार इस कमरे में वेगम साहब को उठा मँगवाइये यह जगह ठीक है।

बादः०—अच्छा खैर यही सही (नौकरों से नौकरो शाहजादी को यहाँ उठा लाओ ।

नौकर—बहुत अच्छा जहांपनाह ।

(नौकरों का उठा लाना)

बैद—यहां बेगम को सुला दो और जरा जर ट कर खड़ा हो जावो (बैद का नारी देखना)

बैद—ओफ़ २ (पेट छूकर) सब पेट में खड़बड़ ड़बड़ भग या खुदा अच्छा सरकार एक बात ००) अगर मिले तो दवा बनाकर इसी जगह यार करूँ । (बैद का खडा होना) ।

बाद०—अरे भाई अच्छा तो करो लो ५००)

बैद—रु. लेकर सरकार एक घण्टा में न अच्छा सकी तो आज रातभरमें अच्छाकर देब या चार कर हर वक्त बेगम के पास रहने का हुक्म दो ौर जो हम नौकरोंसे कहें नौकर लोग वही करें

बाद०—अच्छा (नौकरोंसे) अच्छा ऐ भाई तुम

लोग दो आदमी चौबिस घण्टे शाहजादी के पास रहो और जो बैद कहे सो किया करना।

(इतना नौकरों से कह कर बादशाह का रोना)

बैद—सरकार जहांपनाह रोईं मत आप सब लोग यहां से जाइये नहीं बेगम घबड़ा जावेगी।

(बैद का बादशाह को ढकेल समझाते हुए वहाँ से हटाना और चालाकी के साथ मोताहार तकमा खत बादशाह के पाकेट में रख देना बादशाह वगैरह का जाना, कुछ देर तक नारी देखना रात का होना, बैद का बेगम को बेहोशी शीशी का सुघाना ।)

बैद—अच्छा ऐ नौकरो रात का वक्त होगया और तुम लोग यहीं आराम करो।

(शीशी का सुघाना बेगमका बेहोश होना नौकरों का वहीं लेटना)

बैद—या खुदा अफसोस बेगम तो मर गई।

(नौकरों का उठ कर खड़ा होना)

नौकर—तो ऐ बैद बादशाह को खबर दे।

बैद—नाहीं नाहीं (रोकर) अरे बाप रे बाप ५००) के गठरी लिहले बाटो जिआइब तबौ न पाइब अरे मोरे अल्ला हो ! मोरे अल्ला !!

पहिला दृश्य ।

(अफयून सौदागर के बेटे का अफसोस करते परदे से निकलना बेटे का नाम जेर है)

जेर—(का कहना)

या खुदा अफसोस की डाली इधर क्यो कर झुकी ॥
आजार अब्बाको लगाओ शक्ल भी जातीसुखी ॥
परदेश में आये हुये हैं पर नहीं करते सुखी ॥
माल घर का खा रहे हैं औ सदा रहते दुखी ॥

हाय अफसोस क्या जले को जलाना था, या मरेही को मारना था खैर अगर किस्मत फिरी तो क्या फिर जबको सदा दुख भोगली । (अफयून का आना)

अफयून—अरे फरजन्द ।

जेर—हाँ हाँ अब्बाजान क्या है ।

अफयून—अरे क्या बकता है ।

किस्मत का लिखा ।

अफयून—क्या किस्मत में लिखा है ।

बाद०—अच्छा खैर यही सही (नौकरों से नौकरो शाहजादी को यहाँ उठा लाओ ।

नौकर—बहुत अच्छा जहांपनाह ।

(नौकरों का उठा लाना)

बैद—यहां बेगम को सुला दो और जरा जर ट कर खड़ा हो जावो (बैद का नारी देखना)

बैद—ओफ ३ (पेट छूकर) सब पेट में खड़बड़ ड़बड़ भग या खुदा अच्छा सरकार एक बात ००) अगर मिले तो दवा बनाकर इसी जगह यार करूँ । (बैद का खड़ा होना) ।

बाद०—अरे भाई अच्छा तो करो लो ५००)

बैद—रु. लेकर सरकार एक घण्टा में न अच्छा सको तो आज रातभरमें अच्छाकर देव या चार कर हर वक्त बेगम के पास रहने को हुक्म दो और जो हम नौकरोंसे कहैं नौकर लोग वही करें

बाद०—अच्छा (नौकरोंसे) अच्छा ऐ भाई तुम

लोग दो आदमी चौबिस घण्टे शाहजादी के पास हो और जो बैद कहे सो किया करना।

(इतना नौकरों से कह कर बादशाह का रोना)

बैद—सरकार ज़हांपनाह रोईं मत आप सब लोग यहां से जाइये नहीं बेगम घबड़ा जावेगी।

बैद का बादशाह को ढकेल समझाते हुए वहाँ से हटाना और चालाकी के साथ मोतीहार तकमा खत बादशाह के पाकेट में रख देना बादशाह वगैरह का जाना, कुछ देर तक नारी देखना रात का होना, बैद का बेगम को बेहोशी शीशी का सुंघाना ।)

बैद—अच्छा ऐ नौकरो रात का वक्त होगया और तुम लोग यहीं आराम करो।

शीशी का सुंघाना बेगमका बेहोश होना नोकरां का वहीं लेटना)

बैद—या खुदा अफ़सोस बेगम तो मर गई।

(नौकरों का उठ कर खड़ा होना)

नौकर—तो ऐ बैद बादशाह को खबर दे।

बैद—नाहीं नाहीं (रोकर) अरे बाप रे बाप ५००) के गठरी लिहले बाटो जिआइब तबौ न पाइब अरे मोरे अल्ला हो! मोरे अल्ला !!

नौकर-(घबड़ाके) तो साहब हमें कुछ बताओ लोग क्या करें।

बैद-तुम लोग किले के बाहर ले चलो मैदान सुताओ मैं मंत्र से उसे जिलाऊँगा तबै न ०) पाउँगा। उठाओ ले चलो।

(सब नोकरों का उठा कर किले के बाहर ले जाना, यानी परदा से घुमाकर सुला देना)

बैद-अच्छा तुम लोग जाव अपने २ कमरे में राम करो। मैं सवेरा होते ही जिला कर किले जाऊगा। (नौकरो का जाना)

बैद-अबका सब काम बनल ५००) रु० भी ली और बेगम के भी चोरवलि अबका बेगम के ने घर ले चले के चाही।

(बैद यानी डाकूका शाहजादी को उठा कर ले जाना)



तेरहवाँ दृश्य ।

(बादशाह का दरबार बादशाह वजीर वगैरह का आना)

बादशाह (घबड़ाया) ऐ खूदा गजब अफसोस डाकू मरदूद आकर और शाहजादी को भी चुराले भागा मैं कैसा अन्धा आदमी हूं कि चोर दांव मार लेगया और मैं उसके ऐयारी में भुला गया ।

(पाकट में हांथ डाले खत पाये सुनकर)

यो खूदा खैर ये कैसी खत पाकट में आई जो मेरी बड़ाइ । बजीर२ पढ़ा पढ़ा तो अफसोस है ।

वजीर-(पढ़ना) जनावे आली जहांपनाह बादे आदाब के मालुम होकि मैं नाहर खानदान के ऐयार डाकू हू सोआप मोती तमका पाया सो जानना और मैं आप का ५००)रु० पाया और मैं कल चोरी करने आऊगा होशियार रहना । (द: ऐयार डाकू)

बादशाह-(उछलकर) अरे बाप रे बाप

भी फिर चोरी करेगा वडोर शहर में ढढोर
रदे कि अगर कोई ऐयार डाकू को पकड़े उरं
ाधा राज पाट मिलेगा।

वजीर-नौकरसे ऐ भाई तुम जाव शहरमेंढिढोरा
रदो कि वादशाह सलामत की हुक्म है कि जो
ार डाकू को पकड़ेगा उसे आधा राज मिलेगा।

नौकर जी सरकार मैं पीट आता हूं।

वहींसे नौकरका ढिढोरा पीटना और यह कहते
े परदेमें घुस जाना भाईरे जो ऐयार डाकू को
ड़ेगा सो हमारे जहाँपनाह का हुक्म है कि
ाधा राजपाट उस आदमीको मिलेगा वो आदमी
बार में हाजिर हो। (वादशाह का भी जाना)

॥ चौदहवा दृश्य ॥

(ऐयार डाकू यानी गंजीना का परदे से निकलना)

जना—वाह वाह रे वादशाह खुब चतुराई करी
ने ढिढोरा पीटवाइ यो बला मैं जान फसाइ

खैर जाता हूँ किसी सौदागर का शक्ल बदल कर बादशाह के दरबार में पहुंचता हुँ और बादशाह को भी गिरफ्तार करता हूँ (जाना गंजानां का)

चौदहवा दृश्य।

(परदे से बादशाह वजीर का निकलना।)

बादशाह—या खुदा कोई मरदुद ऐयार डाकू को पकड़ेवाला दिखाता है और मरदूद नहो ऐयार डाकू भी चोरी करने के लिये आता होगा।

(आना डाकू का सौदागर की शक्ल बनकर)

सौदागर का—बादशाह से–पार्ट–सुना है जहां पनाह ने ढिंढोरा शहर में पिटवाया तभो बन्दा पकड़ने को सरे दरबार में आया।

बादशाहः क्यो कहा २ तू ऐयार डाकू को पकड़ सकता है।

सौदागर–जी हां से पकड़ सकता है।

वादशाः–क्या तुमारा यही काम है।

मौदागरः– जी हां मेरा यही काम।

वादशाः–किस तरह पकड़ सकते हो।

सौदागर– ऐयारी नजुम के जोर से।

वादशाहः–वाह शावस असलहो शेर जो हिम्मत
या भारी। निकालो अव तरीका शेर अपना
म कर जारी॥

सौदारर–हूजुर जा पनाह-सोचकर-मेरो नजुम
ाता है कि चोर आगया मैं नजुम के जोर से
स डाकू से शक्ल बनाकर मिलुगा और उसे
गरिफतार कराऊगा मगर मेरी ये सला है किऐयार
ाकू वढ़ा चतुर हैं उसलिये ऐ तरीका है कि आप
ाहर में ढिढोरा करवा दिजियेकि हमारे वादशाहि
ख्त,पर ये सौदागर का लड़का बैठकर दरवारकरेगा।

वादशाहः–वहुत अच्छा वजीर से-ऐ वजीरशहर
ढिढोरा पिटवा दे कि सौदागर का वेटा अ
ख्त पर बैठेगा दरबार करेगा सो सब शहर
जा लोग सौदागर कोही वादशाह मान॥

वजीर–नोकरसे ए नौकर जा शहर में ढिंढोरा करदे कि सौदागर एक बादशाह के तख्त पर बादशही करेगासो सब प्रजा इसो को बादशाःमाने

नौकर–वहुत अच्छा हुजुरे सलामत अभी जाता है

(नौकर का ढिंढोरा पिटाना वहां से कहते हुये परदे से जाना)

सौदागर–अगर हुजुर सलामत से एक अर्ज है कि आप आज महल में बादशाही पौशाक और मोती जवाहर का जेवर बहन पर पहिरे सोइयेगा और जब डाकू आवे तो सब नौकर ढङ्ग करके सो जाये और हुजुर में डाकू के साथ आऊंगा। और आप जानते भी रहना तो सो जाना और में डाकू को इसारा से कहूगां कि बादशाहके बदन पर सार जवाहिर का रकम है बादशाचघो उठाले चला तब डाकू आपको उठाकर चाहे जहांले जायगा मगरआप जागना मत जबमें आपको कहूँ ऐयारडाकू उठोतब उठतेही डाकूकोपकड़लेना बस गिरफ्तार होजायगा।

बादशाः—(हँसकर) कहा शाबस क्या तरखीब है
रर पकड़ा जायगा अच्छारातकाभी समयहोचला
वानेखास मेंसोताहूँ और तुजा ऐयारको बहकाला
दागर-मगर बादशाह सलामत अगर आपजाग
इगातो मरदूद आपको और हमको मारकर भागेगा।
बादशाहः—नहो नहीमें नहीं जाग सकता क्योंकि
रर डाकू चालाक है [सब लोग का जाना]

पदरहवां दृश्य।

(गजीना का घर यानी ऐयार डाकू) गंजीना का डाकू के शक्
ाना और बादशाःका सोना डाकुका बादशाःको उठाले जाना।

सोलहवां दृश्य।

सबेरे दरबामें अपने बाप को कैदसे निकाल संगमें लेकर जाना)
गंजीना-अब्वा जान २॥होशियार हो जावो। ये राज तुमारा
माल पर तैयार होजा॥ ।बाददशाः को गिरफतार किया॥
(नाहर का भटक परदे में जाना) ॥ समाप्तः॥

पुस्तक मिलने का पता—
गुल्लूप्रसाद केदारनाथ बुक्सेलर,
कचौड़ी गली बनारस सिटी।

जाम प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव काशी में मुद्रित।

जेर—वही वही (छाती पीटकर) जो आप और मैं भोग रहा हूं।

अफयून—तो क्या इरादा है।

जेर—इधर फरजन्द सादा है।

अफयून—खैर तो मेरी यही सलां है कि मैं और बेटी गंजीना घर जाता हूँ और तुम इम महीने का तनख्वाह लेकर दस बीस रोज के बाद तुम भी घर चले आना।

जेर—हां हां मन्जूर है। फरजन्दे दस्तूर है !!

पार्ट—पड़े बे फायदा परदेस में कुछना नफा हुआ।
लेआये माल घरसे वो दौलत भी सफाहुआ ॥

अफयून—अच्छा फरजन्द बेटी को तो बुलाव।

जेर—नहीं२ अब्वा जान हमरे बड़ी चिढ़ती है में हरगिज नहीं बुला सकता।

अफयून—(का बुलाना) अरे बेटी गंजोना।

गंजीना का—हां अब्वा जान क्या है।

अफयून—अरे बेटी बाहर तो आ।

गजीना—(अदा से) मैं ना आऊगी अब्बा मैं ना आऊीगी मैं आऊगी।

जेर—देखो२बड़ी दुलार पर चढ़गई है बात दुहरानी है

गंजीना—(का आके) देखो हमसे तुम मत लगा करो नहीं तो मारदूगी नालायक पाजी।

जेर—देखो२ अब्वा जान मना करदो छोटीसी लवंडी मारदेगी।

(गंजीना का रोना)

आँ आँ आँ आँ अब्वा हमें लवंडी कहते हैं।

अफयून—अरे बड़ा भाई न है।

गंजीना [आँ आँ आँ आँ ऐसाभाई भरसाईमें जाय

अफयून—अररर चुप चुब२ ऐसा न कह ऐसान कह

जेर—अब्वा जान सिनवा के संग खेलती है सोख हो जा रही है।

गंजीना—आँ आँ आँ आँ हमारे संगी को सिनवा कहता है (भाई से लड़ जाना)

जेरका—हटो२ नहींतो मारदेगे और रोने लगोगी

(सिनवा का आना मिनवा को देख कर गंजीना का गले पर हाथ धर के)

गंजीना—अहह हमारे मित्र सिना आये चलो२ ग में खेलने चले ।

(दोनों का जाना अफयून का टोकना)

अफयून—अरे बेटी कहा जा रही है ।

[गंजीना का गाना]

आं आं आं आं हमे क्यो टोके हमे क्यो टोके ।

फयून—अरेकहां जारहीहैबस रोनाही शुरुकरदेतीहै

गंजीना—अहह पूछतेहो कहाजाती है तोअच्छासुनो

(गंजीना का गाना में समझाना)

थियेटर ।

रे अब्बा जातीहूं गुलसने बहार लागी फुलवारी
ल मिल करके खेलुगी आया है मेरा यार ॥
ा चमेली प्यारी लागी सर सर की क्यारी ॥
ुगी बारी २ हमारे अब्बा देखुगी मबको निहार
ाया है बाका सीना, सावन का है महीना । मैंभी

हू गंजीना॥ हमारे अब्बा खेलुगी हाथ गरडार॥
हेलमिल के नाचो कूदो, घर २ के आखे मूदो।
पाकेजो मुझको छूदो॥ हमा रे अब्बा मारकडे तयार
(इतना कहकर फिर गंजीना का जाना फिर बाप का घर लेना)
अफयून-- अरे बेटी सुन तो फिर कहां जातीहै।
जीना—अब्बा फिर टोके आंआं आंआं क्या कहतेहो
फयून—चलुगा देशको अपने चलो तैयार हो जायें।
दा किस्मत में जो लिखा चलेफिर लौटके जाये॥
जीना—अरेअरेअरे क्या२ बकते हो देशकोक्या
मनवाका संग छुट जायगा क्या खेलमिट जायेगा।
अफयून—हां किस्मत में लिख जायगा।
गंजीना—तो में नहीं जाऊगीतो में नहीं जाऊगी।
जेर—क्यों ना जाऊगी काहे ना जावोगी)
जीना—देखो देखो अब्बाजान मनाकरदो फिरबोले
अफयूय—अरे बेटी गंजीना छोड़ संग सीना
ये दस महीना।

गंजीना—अच्छा अब्बाजान अगर सिना कहे तो चले

अफयून—अच्छा सीना हुक्म दो लड़कपन की दोस्ती

सीना—जावो २ ऐ गंजीना जावो फिर तो आवोगी।

गंजीना—नहीं २ मित्र मुसकिल है जाने कोन कहिये।

सीना—तो क्या तोहमत लगाये या छिन ले जाये।

गंजीना—अच्छा अब्बाजान सिना के बाप कहे कि जावो तो मै चलुगी नहीं तो मै नहीं जाऊगी।

अफयून—अच्छा चल।

(आना सबका सीना के बाप के यहां सीना का बाप खिर्जन)।

अफयून—खीजन सलाम पहुचै जाता हूं देश को
दो हुक्म कहती वेटी करू बात सेस को ॥

खिर्जन-अहाहा देखो खुदा ऐ दोनो कालकपन में दोस्ती
होजाती क्या प्रबल येबड़पन में दोस्ती ॥

अफयून—क्या खिर्जन क्या खिर्जन क्या कहा बच्चों की दोस्ती छुट जायगी। कदापि नहीं में ये करार करता हूं कि ऐ गंजीना आप की है करू

दोनों की सादी जो विलाप की है।

खिर्जन—मैं आप के देश में बागत लाऊगा।

अफयून—हां हां बहुत ठीक चलतेखत को पठाऊगा खैर२ किस्मत हिलाया चलो तैयार हो जाए।

(अफयून और गंजीना का देश पर जाना दोना का गाना)

चेचर गाना।

छोड़ा मैं दौलत खाना आया परदेश में।

हो गये मैं तबा भेस दरबेस में॥

अरेमेरी तकदीर पट होगई। निहायत फकीरीहुई भेश में॥ १॥ पता भी नहीं घरका क्या हाल है खुदा ने गिराए कैलेश में॥ २॥ अगम वन की रास्ता बड़ासक्त है। पड़ी जान आके येकौलेश में॥ ३॥ अरे मारकंडे सहाये खुदा। पड़ा आके चक्कर फसे टेस में॥ ४॥